दिनांक–26.11.2015 मद्य निषेध दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के संबोधन का ट्रांस्क्रिप्शन

बिहार सरकार के मुख्य सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह जी, राजस्व परिषद् के सदस्य श्री आनंद वर्द्धन सिन्हा जी, निबंधन उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग के प्रधान सचिव, जिन्होंने आज ही कार्यभार संभाला है के0 के0 पाठक जी, मुख्यमंत्री के सचिव श्री अतीश चंद्रा जी, उत्पाद आयुक्त कुवंर जंगबहादुर जी, बिहार स्टेट बेवरेज कॉरपोरेशन लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्रीमति अनुसूई दतात्रेय जी, जीविका कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित स्वयं सहायता समूहों, ग्राम संगठनों से जुड़ी यहॉ उपस्थित दीदीयॉ, पटना कला एवं शिल्प महाविद्यालय छात्र–छात्रायें, यहॉ उपस्थित सभी विशिष्ट अतिथिगण, विभिन्न स्कूलों से आई छात्रायें, प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के यहॉ उपस्थित सभी पत्रकार बंधुओं, छायाकार बंधुओं, देवियों और सज्जनों। 2011 से आज के दिन को मद्य निषेध दिवस के रूप में मनाया जाता है। मैंने देखा कि विभाग का नाम है उत्पाद एवं मद्य निषेध। लेकिन उत्पाद पर तो जोर था। मद्य निषेध पर जोर थोड़ा कम था। इसलिये हमने कहा विभाग का दोनों काम है। और प्रमुख काम मद्य निषेध है। और जो हम टैक्स लगाते हैं। कई प्रकार के सेस लगाते हैं। वह इस दृष्टिकोण से कि शराब को और महंगा किया जाये। और शराब लोगों के पहुंच के बाहर हो जायें। कम लोग शराब पियें। चुंकि शराबबंदी यहॉ लागू नहीं है। तो मद्य निषेध पर जोर प्रारंभ हुआ। 2011 से और अनेक प्रकार के कार्यक्रम तबसे आयोजित किये जाते हैं। और इसी प्रकार के कार्यक्रम में मैंने इस बात पर जोर दिया था कि यदि स्वयं सहायता समूह से जुड़ी दीदीयॉ अगर इस काम को अपना लें तो मद्य निषेध लागू करने में बहुत सहूलियत होगी। तो वातावरण का निर्माण होगा। और आज मुझे खुशी हुई कि दो ग्राम से आई हुई दीदीयों ने आपबीती सुनाई, अपना अनुभव बताया कि क्या क्या उनके गॉव में हुआ। शराब की दुकान थी और उसके चलते किस प्रकार से उसका कुप्रभाव गॉव पर पड़ा। और दरअसल महिलाओं के लिये ये बहुत ही कन्सर्न का विषय है उनके लिये चिंता का विषय है। इसका दुष्प्रभाव सबसे अधिक महिलाओं पर पड़ता है। और खास करके गरीब लोगों में शराब पीने की जो प्रवृति पैदा हो रही है। और अगर ऐसी प्रवृति पैदा हो जाती है तो ये एक लत है। और उसके पास जो कुछ भी कमाई का पैसा है जिसका खर्च होना चाहिये परिवार के भरण–पोषण पर, बच्चों की शिक्षा–दीक्षा पर वो पैसा खर्च करने लगते हैं लोग शराब पर। शराब पीने वाले दो तरह के हैं। एक हैं जिनके पास संपति है, महंगी शराब पीते हैं। अपने स्वास्थ्य के प्रति वे सचेत भी रहते हैं। तो जो कुछ भी करते हैं जान बुझकर करते हैं। ऐसा नहीं है कि उनको जानकारी नहीं है कि शराब पीने से शरीर को

क्या–क्या नुकसान होता है और दूसरे तरफ हम देखते हैं कि देसी शराब या देसी शराब का ही एक रूप होता है मसालेदार शराब। तो ये शराब जो पीते है वो कम आय वाले लोग हैं। और उनके अंदर शराब की लत लगती है। तो यह सिर्फ उनके स्वास्थ्य को चौपट नहीं करता है बल्कि पूरे परिवार को बरबाद कर देता है। और हमने देखा है अपने दस वर्षों के कार्यकाल में। हर जगह हमने महसूस किया है और धीरे धीरे यह देखा है कि महिलाओं पर सबसे अधिक इसका दुष्प्रभाव पड़ता है। घर के अंदर शांति चली जाती है। जो पैसा खर्च होता बच्चों के उपर वो पैसा खर्च नहीं कर पाती है। खर्च करने के लिये वो पैसा उपलब्ध ही नहीं रहता है वो पैसा शराब पर खर्च हो जाता है। महिलायें भी अगर कुछ कमाती हैं पैसा लाती हैं। तो स्वाभाविक है कि उस पर भी शराब पीनेवाला जो पति है उसको हथिया लेता है। तो परिवार की भी हालत खराब और अभी तो स्वयं सुना कि अगर शराब की दुकान है तो उसके बाद लोग किस प्रकार से व्यवहार करते हैं। खासकर महिलाओं के साथ, लड़कियों के साथ और किस तरह की परेशानी उन्हें झेलनी पड़ती हैं। तो मद्य निषेध दिवस के आयोजन के बाद ही हमने ये कहा था कि स्वयं सहायता समूह के माध्यम से सतत अभियान चलाना चाहिये। और हमने देखा कुछ जगह महिलायें इसके खिलाफ अभियान चलाती हैं। तो मैंने उनकी प्रशंसा की कि जो अभियान चलाती हैं ठीक करती हैं। और स्वयं सहायता समूह का जो गठन हो गया गॉव में वहॉ महिलाओं में एक चेतना आई है। अभी आप लोगों ने यहॉ बैठे हुये हमारी छात्रायें भी है अन्य लोग भी हैं कलाकार भी बैठे हैं। सब लोगों देखे कि गॉव में रहनेवाली महिला जो पढ़ना–लिखना भी नहीं सीख पाई अपने बालकाल में। और वे स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद कितनी सचेत होती है और सक्रियता के साथ अगर उनको ऐसा कुछ लगता है कि इस पर कुछ कार्रवाई करनी चाहिये। तो कार्रवाई करने के लिये आगे आती हैं। मैं तो चाहता हूॅ और ये स्वयं सहायता समूह पर मेरा जोर देने के पीछे मकसद यहीं है कि अगर गॉव की महिलायें संगठित हो जायेगी, तो न सिर्फ उनकी समूहों के माध्यम से अनेक प्रकार की गतिविधियॉ होती हैं, उनकी आमदनी भी बढ़ेगी। बचत की प्रवृति उनमें आती है। सामूहिकता का बोध होता है। पढ़–लिख नहीं सकी लेकिन वो जानने लगती है सभी बातों को। और मैंने तो देखा है, स्वयं सहायता समूह के साथ के मुझको बातचीत करने का अवसर मिला है। चाहें गया हों, पूर्णिया हों या अन्य जगहों पर हों। तो मैंने महसूस किया है कि बैंकिंग से संबंधित मसलों के बारे में आम तौर पर पढ़े–लिखे लोगों की जानकारी और समझ नहीं है। और हमने देखा कि बिल्कूल सुगमता के साथ महिलाओं ने अपनी बात को रखा। बैंक के साथ क्या कठिनाई आती है। बैंक के साथ क्या कठिनाई आती है। या बैंक के साथ उनका क्या संबंध स्थापित हुआ है। किन चीजों के लिये उनको बैंक में जाना पड़ता है। तो हमने देखा इससे एक जागृति आती है उनमें। और उनमें सामूहिकता का बोध जग रहा है। बचत

करना भी सीख रही है। जो पढ़ना–लिखना नहीं जानती हैं वे नियमित तौर पर मिटिंग करती है। और जो मिटिंग होती है बारी बारी से हरेक सदस्य के यहॉ और प्रोसिंडिंग लिखे जाते हैं उनके। क्या मिटिंग में निश्चय हुआ। क्या मिटिंग में तय हुआ। और हर कार्यक्रम में उनको बखूबी निभाती है। हमने तो स्वयं सहायता समूह का देखा पूर्णिया में उनके साथ इंटरैक्ट करने का मौका मिला। जन वितरण प्रणाली का जो काम है इनको सौंपा गया। तो आम तौर पर आप देखिएगा कि जन वितरण प्रणाली से जुड़े हुए जो डीलर हैं वो प्रायः हमेशा कहेंगे इसमें कोई लाभ नहीं। कुछ बचता नहीं हैं कुछ मिलता नहीं है। लेकिन जो स्वयं सहायता समूह है उसके द्वारा संचालित जन वितरण प्रणाली की दुकान पूर्णिया में। तो मैंने पूछा उनसे। चूंकि सारी बात को देखने के बाद, समझने के बाद कि कितना बढ़िया ढंग से वे संचालित कर रही हैं। हमने पूछा कि कोई बचत होती है? तो उन्होंने कहा कि हॉ, चार से पॉच हजार रूपये के बीच में बचत है। तो इस तरह के काम वे करती हैं। उसी प्रकार से हमने कहा था कि स्वयं सहायता समूह के दीदीयों को लगना चाहिये, शराबबंदी के अभियान को तेज करना चाहिये। शराब के खिलाफ, नशे के खिलाफ, शराब के लत के खिलाफ अभियान चलना चाहिये। हमने देखा उनका अभियान चल रहा है। हमको याद चुनाव के पूर्व में मैं स्वयं सहायता समूह के एक कार्यक्रम में श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल पटना में गया था। और उस कार्यक्रम में अपनी बात कहकर अभी बैठा ही था कि पीछे से कुछ आवाज आने लगी। तो भई क्या आवाज आ रही है। तो मैंने ध्यान से सुनने की कोशिश की। तो बहुत पीछे से दीदीयों ने ये कहा कि साहब शराबबंदी लागू किजिये, शराबबंदी लागू किजिये। मैं बैठ गया था तब लौटकर फिर माइक पर गया और कहा कि अबकी बार आयेंगे तो लागू कर देंगे। तो ये मेरे दिल से आवाज निकली और मैं महसूस करता हूॅ। ये कठिनाई है एक समय में उत्पाद के एक्साइज के तौर पर कम राशि आती थी। और अब धीरे–धीरे पूरी व्यवस्था को पारदर्शी बनाकर आमदनी बहुत होने लगी है इसमें कोई शक नहीं। और सरकार के काम में सहूलियत है अपना राजस्व तो हम अपनी जगह पर हैं। और ये दुविधा मन में हमेशा जबतब आती थी कि भई पहले भी शराबबंदी लागू की गई थी। लेकिन इफेक्टिव हुई नहीं। 1977 में लागू हुआ था 1977 या 1978 में। लेकिन वो बहुत प्रभावकारी नहीं हुआ तो बाद में फिर से वो शुरू हो गया और किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन मैंने ये बात कही और मैं महसूस करता हूॅ कि महिलाओं के जीवन पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। शराब के चलते। और खास करके ग्रामीण अंचल में, हर जगह है लेकिन मुख्यतः और सबसे अधिक ग्रामीण अंचल में और खास करके गरीब परिवारों में जो अपने श्रम के बदौलत अपने परिवार का भरण–पोषण करते हैं। मजदूरी करके अपने घर का काम चलाते हैं। छोटी–मोटी खेती है उनके पास। तो उन लोगों के जीवन में ये शराब जहर के रूप में है। तो वैसे लोगों को तो पीना ही नहीं चाहिये। अब

ये पीने की आदत ऐसी है और पीने का मसला ऐसा है कि इसके बारे में कुछ कहने की जरूरत नहीं है। हमको तो इसके बारे में जानकारी नहीं थी। जब पहली बार मैं मुख्यमंत्री बना तो हमने कहा कि आखिरकार भई क्या इसकी स्थिति है। मैं इसकी समीक्षा कर रहा था। लगातार देख रहा था कि भई आखिर ये होता क्यों नहीं। ये दो सौ तीन सौ करोड़ पर है। और दूसरे राज्यों में देख रहे हैं कि इसके माध्यम से आमदनी बहुत है। तो मैं घंटों बैठा क्योंकि मैं इस विषय को जानता ही नहीं हूँ। उस चीज से मेरा कोई वास्ता ही नहीं रहा है। इसको समझने में थोड़ा समय लगा। और समझने के बाद हमको इस बात का अहसास हुआ कि साहब अपने यहॉ बिहार में जब हम देखते थे कि मैन्यूफैक्चरर, होल सेलर और रिटेल ये तीनों एक ही के हाथ में हैं। तो मेरे मन में उस समय बात आई कि इस चेन को ब्रेक करिये। और चेन को ब्रेक किया गया और बेवरेज कॉरपोरेशन का निर्माण किया गया। और उस समय से शुरू हुआ। बढ़ते, बढ़ते पॉच सौ करोड़, सात सौ करोड़, हजार, बारह सौ से बढ़ते बढ़ते अब तो तीन हजार करोड़ तक पहुंच गया है। अब चार हजार करोड़ की बात है। तो एक कदम उठाने से ये हुआ। ऐसा नहीं था कि यहॉ पर एक्साइज से आमदनी कम हो रही थी टैक्स की। लेकिन शराब की खपत कम नहीं थी। काफी खपत थी। कहीं और से आ जा रहा था। तो इन चीजों को लाया गया, सुधार लाया गया। तो अच्छी खासी राजस्व की आमदनी राजस्व मद में हो रही है। तो ये अपनी जगह पर है। लेकिन इसका दुष्प्रभाव खासकर गरीब लोगों पर इसका जो दुष्प्रभाव है। गरीब परिवार जो बिखर रहा है बरबाद हो रहा है। सरकार के हर प्रकार के कार्यक्रमों के बावजूद। और अभी तो स्वयं सहायता समूह के महिलाओं ने बता दिया कि भई क्या तरीका है। कैसे ये धंधा चलता है। और किस प्रकार से ये लोग आगे बढ़ते है। ये सच्चाई है। हमने चीफ सेक्रेट्री को कहा कि भई जब दोनों बोल रही थी स्वयं सहायता समूह की दीदी, तो हमने कहा कि दीदी को भी बुला देना चाहिये ऐसे कार्यक्रमों में। क्योंकि जाने तो सही लोग कि हो क्या रहा है होता क्या है। हम चाहे कुछ भी कहे। दरअसल गॉव के स्तर पर, नीचे के स्तर पर हो क्या रहा है। तो जानना चाहिये सबको समझना चाहिये। कोई जरूरी नहीं कि हर चीज का प्रमाण ही मिल जाये। लेकिन ये आम तौर पर ये जो कुछ भी हो रहा है। उससे सब परिचित है समाज के अंदर। तो शराब का जो कुप्रभाव है हमारे जनजीवन पर। इसको मैं समझता हूँ। और इसलिये मैंने वो बात कही। और जो बात मैंने कही है। तो हम उससे पीछे हटनेवाले नहीं हैं। और उसको हम लागू करेंगे। और जो बात हमने पहले कर दी उसी पर लौट कर आते है। हमने एक्साइज डिपार्टमेंट को कहा था कि पहले एक्सरसाइज कर लें। तो आप जानते ही हैं शुरू में जो बात होती है। इतनी आमदनी होती है तो क्या होगा। कैसे होगा। तरह तरह की बात मैं चुपचाप सुनता रहता था। और दुबारा चुनाव जो संपन्न हो गया। चुनाव संपन्न होने के बाद हमने फिर से कार्यभार संभाल लिया।

बिहार के जनता के जनादेश के अनुरूप और अपना कार्यभार संभालने के तुरंत बाद मैंने यही मैसेज दे दिया। चीफ सेकेट्री साहब को बता दिया कि हमने जो कहा है उसपर अमल होना है। और इसके बारे में आपलोग पूरी तैयारी कर लीजिये। और हम भी जानते हैं कि जो करेंट ईयर में इसमें बहुत सारे सारी समस्यायें होंगी। कितनी समस्यायें रहती है जिनको गिनाया नहीं जा सकता। कई प्रकार के टैक्स, सब कुछ, तो मुझको भी मालूम है कि असंभव है लेकिन हमने कहा कि अभी पर्याप्त समय है पूरी तैयारी कर लीजिये। और चीफ सेक्रेट्री साहब यहॉ बैठे हुये हैं। और हमारे प्रधान सचिव के0 के0 पाठकजी आये हैं। सोच समझकर हमने ये जिम्मेवारी उनको दी है कि अब इसकों ये पूरी कड़ाई से और मजबूती के साथ करेंगे। इस कारोबार में कोई घपला न कर सके और दूसरे तरफ हमारे गरीब लोग झेलते आज इसके चलते मेरे मन में जो बात है शराबबंदी की बात। तो उसको लागू करना है तो इस दिशा में अपने डिपार्टमेंट में सबकुछ डिसकस किजिये और हमने कहा कि इसका एक्शन प्लान तैयार करिये। और मेरे लिये वो तारीख है एक अप्रैल 2016। एक अप्रैल 2016 से हम इस संबंध में नई नीति लागू करना चाहते है। और वो नीति ऐसी हो कि हमारे गरीब के जीवन में जो अंधेरा है आज शराब के चलते वो समाप्त हो। और इस दिशा में काम करिये। और चूंकि इसको वर्कआउट किया जा रहा है। अभी इसकी तैयारी प्रारंभिक तौर पर की जा रही है। इसलिये आज के दिन उसके डिटेल को कहना शायद न तो संभव है और न मुनासिब है। क्योंकि आज यदि मैं कुछ कह दूं तो इसके बाद वो अंतिम चीज है। इसलिये कहूंगा नहीं। मैं पूरा अवसर देता हूॅ कि आप किजिये। लेकिन हम पीछे नहीं हटेंगे। हमने जो कहा है हम बिहार में महिलाओं के सच को समझ सकते हैं। हमें चाहिये तरक्की। अगर कुछ पैसे का नुकसान भी हमारे खजाने में होता है। तो और चीजें वेट कर लेंगे। थोड़ा धीमी होगी साल दो साल प्रगति। लेकिन धीरे–धीरे हम उसको एडजस्ट कर लेंगे। हमको मालूम है अनुभव की चीज है। केन्द्र सरकार ने जो फंडिंग पैटर्न बदल दिया है केन्द्र प्रायोजित योजनाओं में। केन्द्र ने अपना अनुपात घटा दिया है और राज्यों का अनुपात बढ़ा दिया है। तो इसके चलते राज्य सरकारों पर बोझ बढ़ रहा है। और कतिपय महत्वपूर्ण योजनायें यानि जिनके इंप्लीमेंटशन को रोका नहीं जा सकता। अब जैसे आईसीडीएस के काम को रोका नहीं जा सकता हमारे यहॉ। सर्व शिक्षा अभियान के तहत शिक्षा के जो हमारे प्रारंभिक प्राथमिक शिक्षा के कार्यक्रमों को रोका नहीं जा सकता। लेकिन इन सभी क्षेत्रों में जो फंडिंग पैटर्न बदल दिया है केन्द्र सरकार ने। और जिसकी सूचना जारी हुई है। हमलोग उसे हर स्तर पर उठा रहे हैं। और इसके लिये अपना विरोध प्रकट कर रहे हैं। वो अपनी जगह पर है। और दूसरी बात है कि सातवें वेतन आयोग की जब सिफारिशें आई हैं। तो इन सब चीजों को लेकर हमारे उपर अतिरिक्त बोझ भी है। और दूसरी तरफ जो आमदनी जिस श्रोत से होती है

वह भी एक समस्या है। ये अपनी जगह पर है। लेकिन इन सारी समस्याओं के रहते हुए हमें अपने इस कार्ययोजना को तैयार किजिये। इस पर 1 अप्रैल 2016 से अमल करना है। और हम चाहते है कि गरीब घरों में खुशी लौटे। जो पैसा है उस पैसे का इस्तेमाल लोग शिक्षा पर करें। पोषणयुक्त आहार पर करें। उनका भविष्य बेहतर हों। और जब महिलायें प्रसन्न रहेगी और महिलायें खुश रहेगी। तो मैं जानता हूँ कि जो हमारी तरक्की है। वो और दूसरे रफ्तार सें हो सकती है। सबसे बड़ी चीज हम अपनी आधी आबादी की ताकत को पहचानते नहीं हैं। हमने तो कुछ हद तक पहचानने की कोशिश की है। और इसलिये हमने स्वयं सहायता समूह पर इतना जोर दिया है। स्वयं सहायता समूहों का गठन दूसरे राज्यों में पहले से शुरू हुआ। बिहार में ये काम देर से प्रारंभ हुआ। लेकिन जो बिहार ने प्रारंभ किया है स्वयं सहायता समूहों ने, जीविका कार्यक्रम के माध्यम से। वह देश का सर्वश्रेष्ठ मॉडल है। और यहीं कारण है कि केन्द्र सरकार ने इन दिनों बिहार के मॉडल को देश भर के लिये अपनाया। अब ये बात अलग है कि उसमें भी पैसे की कटौती हुई है। खैर चलिये वो एक अलग बात है। केन्द्र जीविका में कितनी कटौती कर रही है। उससे हम प्रभावित होनेवाले नहीं है। हमारा जो लक्ष्य है दस लाख समूहों का गठन करना। हम उस लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ते जायेंगे। तो एक तरफ हम समूह गठित कर रहे हैं। महिलाओं को संगठित कर रहे हैं। और दूसरी तरफ महिलायें किसी चीज को लेकर परेशान हों, तो उनके लिये हमें अनुकूल वातावरण निर्मित करना होगा। और अनुकूल वातावरण निर्मित करने में शराब बाधक है। इसलिये इसकों भगाना ही पड़ेगा। लोगों की पहुंच से, गरीब लोगों की पहुंच से इसको भगाना पड़ेगा। अब ऐसे तो कई तरह के लोग तर्क देंगे। कहेंगे कि साहब बंद तो कर दीजियेगा। यहॉ से आ जायेगा, वहॉ से आ जायेगा। अरे जब आयेगा, उस समय निबटा जायेगा। अभी जो लोग भुगत रहे हैं। इससे तो लोगों को छुटकारा देना है। सबसे पहले शुरूआत यहॉ से कर देनी होगी। तो आज के इस अवसर पर हमारे जो पटना के आर्ट कॉलेज के छात्र–छात्राओं ने पेंटिंग किये है, स्कल्पचर का काम किया है। सब बहुत बेहतरीन काम किया है। और मुझे तो बड़ी खुशी होगी। और हम तो चाहते हैं कि ऑर्ट कॉलेज और तरक्की करें। और आगे बढ़े। ऐसा थीम आप सोच सकते हैं। थीम बेस्ड उनकी रचनायें तो मैं उनका भी अभिनंदन करता हूँ इस अवसर पर। जिन्हें पुरस्कृत किया गया है उनका अभिनंदन करता हूँ। और अभी जो दो गॉव के स्वयं सहायता समूहों के और ग्राम संगठन के दीदीयों ने जो अभी भाषण दिया, तो पाठक जी हम पहले ही कह चुके हैं कि जो स्वयं सहायता समूह या ग्राम संगठन नशा के खिलाफ अभियान चलायेगा। और इफेक्टिव अभियान चलायेगा। और अपने गॉव में उनको बंद करा देगा। उनको हम पुरस्कृत करेंगे। तो मैं आपसे यहीं कहूंगा कि दो जगहों के प्रतिनिधि आप ही द्वारा चयनित हैं। लाये गये हैं। इन्हें हमारी घोषणा के अनुरूप जरूर पुरस्कृत किया जाना

चाहिये। ताकि ये पूरे राज्य में संदेश जाये। यानि दोनों काम करना पड़ेगा। अन्यथा संभव नहीं है कि शराबबंदी लागू कर दें और वो बंद हो गया। शराबबंदी भी लागू करना पड़ेगा और शराब के खिलाफ अभियान भी चलाते रहना पड़ेगा। ये दोनों के संयुक्त प्रयास से हम लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। इसलिये उन्हें पुरस्कृत किया जाना चाहिये। तो इन्हीं शब्दों के साथ आप सब को धन्यवाद देते हुये, विभाग को धन्यवाद देते हुये, उनके ग्रुप को, उनके ग्रुप में शामिल हैं हमारे नये साथी मंत्रीजी श्री जलील मस्तान साहब। उनके परिवार में गमी हो गई है थोड़ा सा उसके चलते उन्होंने मुझे सूचना दी थी। मुझसे परामर्श लिया कि हम क्या करें। बताइये किसी के परिवार में गमी हो जाये तो हमने कहा कि नहीं आप जाइये। तो आज वे यहॉ पर नहीं हैं। लेकिन उनका भी खुले तौर पर कमिटमेंट है इस बात को लेकर। तो मैं इन्हीं शब्दों के साथ इस अवसर पर आप सब को अपनी शुभकामनायें देता हूँ। जबतक लोगों में भी जागृति नहीं आयेंगी और वाकई लोग मानने नहीं लगेंगे कि भई अब पीना ठीक नहीं हैं। तबतक तो काम हुआ नहीं, काम जारी रखना पड़ेगा। इस प्रवृति पर काबू पाना है। इसीलिये काम करते रहना चाहिये। इन्हीं शब्दों के साथ आप सब को धन्यवाद देते हुये और मुझे खुशी है कि नया काम और दायित्व संभालने के बाद अगर सरकार के द्वारा किसी आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने का मौका मुझको मिला तो इस मद्य निषेध दिवस के अवसर पर मिला ये 26 नवंबर की तारीख पिछले कार्यकाल में 2010 में हमारी सरकार ने कार्यभार 26 नवंबर को संभाला था। तो इसलिये 2011 के 26 नवंबर से मद्य निषेध दिवस मनाया जाता है। तो आज भले ही हमने 20 नवंबर को कार्यभार संभाला। लेकिन मुझे खुशी है कि को एंसीडेंसियली कि साहब हमको मौका भी मिला इस कार्यकाल में पहला किसी कार्यक्रम में जाने का तो मुझको मिल गया इस मद्य निषेध दिवस के अवसर पर। तो मेरे लिये याद रखनेवाली बात है।